आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025

Received: 22/06/2025; Accepted: 21/07/2025; Published: 28/08/2025

हिंदी कथा साहित्य में नारी – दशा–दिशा

डॉ. वासुदेवन 'शेष'

डी.लिट

चेन्नई

चलभाष9444170451-

डॉ. वासुदेवन 'शेष' , हिंदी कथा साहित्य में नारी– दशा–दिशा, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025**,(155 -158) https://doi.org/10.5281/zenodo.17072377

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

प्रत्येक युग में तात्कालिक परिस्थितियों के अनुरूप समाज में नारी की स्थिति ओर उसके प्रति धारणा में सदैव अन्तर रहा है। वैदिक काल में जहाँ नारी को सम्माननीय स्थान देकर भगवती, धुभगे, सरस्वती आदि आदर सूचक नाम से अभिहित किया गया, तो नारी मुगल काल में उसे दासी का निष्कृष्ट स्थान भी दिया गया। कभी वह समर्पिणीख् अर्धांगिनी थी तो कभी दासी या वासना पूर्ति का साधन। धीरे –धीरे वह कहीं सामाजिक बंधनों से मुक्त हुई। वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गई। समाज सुधारकों के प्रभाव से , नारी सुधार आंदोलन के प्रभाव से नारी में सुधार हुआ। नारी जागरण हुआ। इस जागरण में नारी को नया मोड दिया। स्वतंत्र भारत के सविंधान ने नारी को पुरूष की बराबरी का अधिकार दिया। भारतीय इतिहास के उथल पुथल के बावजूद भारतीय नारी के कुछ विशिष्ट गुणों ने उसे विश्व के अन्य नारियों से अलग खड़ा कर दिया।नम्रता,कोमलता, विनय, लज्ज, संकोच, मर्यादा आदि से । इस प्रकार समय समय पर समाज में नारी का स्वरूप परिवर्तित होता रहा। जिस प्रकार स्वयं नारी में वैचारिक बदलाव होते रहे उसी प्रकार युगांतर से समाज में भी नारी के प्रति विचार बदलते रहे। नारी शक्ति है, प्रेरणा है, वात्सल्य की सजीव मूर्ति है। परिवार की आधारशिला एवं गृहस्थी का केन्द्रबिंदु है। वह पुरूष के लिए कभी जन्मदात्री , पोषणकर्ती माता के रूप में आती है। कभी सखी , सहयोगिनी के रूप में। फिर कभी

स्नेह की भावधारा प्रवाहित करने वाली भगिनी के रूप में । इस प्रकार नारी की महत्ता माता, पत्नी, बहिन, पुत्री सभी रूपों में है।

हमारा विश्व और हमारा समाज तीव्रगति से बदल रहा है । बाजारवाद और वैश्वीकरण, जीवन मूल्यों को निर्णायक होता जा रहा है । जिसमें भारतीय समकालीन मूल्यों की खोज कठिन दिखाई देती है । इसी व्यापक आयाम में समकालीन साहित्य में नारी संवेदना का स्वरूप और पक्ष खोजना और निर्धारित करना हमारा उददेश्य है इसके आयाम और परिवेश में नारी विमर्श आलोचना में नारी , वर्तमान परिवेश में नारी संघर्ष, कविता में नारी , मीडिया और साहित्य में नारी, नारी लेखन की दिशा , समकालीन कविता में घर - समसमय से मुठभेड तथा भूमंडलीकरण का रीतिकालपरिवार नारी परिप्रेक्ष्य, नारी देह और स्वतंत्रता , नारी मुक्ति के नये आयाम , हिंदी उपन्यास, कहानी में नारी संघर्ष के नये प्रस्ताव
आदि आते हैं।

साहित्य में नारी एक महत्वपूर्ण पात्र है, जिसे विभिन्न कालों में विभिन्न रूपों और आयामों में प्रस्तुत किया है । समाज ने अपने विभिनन रूपों से उपभोग किया है । प्रत्येक काल की बदलती परिस्थितियों में उसके व्यक्तित्व के विकास के साथ चरित्र और स्वभाव में अंतर आता रहा है ।यदयपि आज की स्थिति में नारी देवी या दानवी की सीमित छवि से निकलकर पुरूष की सहचर बन गई है । पुरूष उसे परिस्थिति के अनुसार शोषण करता आ रहा है । कई बार स्वयं नारी भी इस बात में पीछे नहीं रही है । समाज में इसके कई उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं –

शशिप्रभा श्रीवास्तव की कहानी 'वचनबद्ध' , 'अस्तित्व,' 'समानांतर' , कर्तार सिंह दुग्गल की कहानी 'कनेर को तो आना चाहिए' , रामदरश मिश्र की कहानी 'वह औरत,' गुरूबचन सिंह की कहानी 'भूखा सूरज,' मेहरूनिससा परवेज की कहानी 'सजा', डॉ प्रमिला वर्मा की कहानी 'ठहरा हुआ कल,' संतोष श्रीवास्तव की कहानी 'नीली बिंदी,' 'दाह संस्कार,' 'मछली,' मोर्चे पर', अजित पुष्कल की कहानी 'नरक कुंडली की मछली' मालती जोशी की 'मोरी रंग दी चुनरिया', शीला मिश्र की कहानी 'मुक्ति किसे,' मोतीलाल शाह की कहानी 'वाल्मीकी का शाप' आदि कहानियों में नारी की दयनीय दशा का चित्रण हुआ है।

आज आधुनिक युग में नारी ने अपने आपको कई अर्थहीन बंधनो से मुक्त किया है । उसने इन सामाजिक रूढियों से मुक्ति पाने के लिए सतत कई वर्षों तक संघर्ष किया है । इसमें शिक्षा ने नारी को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया । तब जाकर नारी ने अपने आपको संघर्ष और विद्रोह से उच्च एवं सुदृढ बना लिया है । लेकिन इस काम के लिए स्त्री को समय की लम्बी छलांग मारनी पडी । इस साहस को इन कहानियों में देखने को मिलता है-

मदनमोहन मदारिया की कहानी 'लाजवंती का पता ', यादवेन्द्र शर्मा' चंद्र' की कहानी 'चिडियाएँ ', सत्यशकुन की कहानी 'पहेली', शशिप्रभा श्रीवास्तव की कहानी 'दंगा,' गुरूबचन सिंह की कहानी 'तेंतुल', डॉ पूर्णिमा केडिया की कहानी 'विसर्जन' और 'उन्मुक्त' , मेहरूनिसा परवेज की कहानी 'लौट आओ बाबूजी',

मालजी जोशी की कहानी 'यातना चक्र 'आदि कहानियों में अन्याय और शोषण के विरूद्ध विद्रोही नारी का चित्रण मिलता है।

पत्नी का दर्जा एक नारी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। जिस नारी का विवाह होता है, उसे सुहागन कहा जाता है और शुभ माना जाता है।उसे पूजा जाता है। एक बार विवाहसूत्र में बँधने से नारी की मर्यादा की सीमा निश्चित हो जाती है। जब तक उस दायरे में है तब तक उसे सम्मान मिलता है और जब वह उल्लंघन करती है तब चाहे वह विवाहित हो या अविवाहित उसे बहुत सी समस्याओं का सामना करना पडता है। इसलिए नारी मी भलाई इसी में वह बंधनो को सहर्ष स्वीकार करके मर्यादा की दहलीज के अंदर रहने का अभ्यास करे।

नारी की विवाह से पूर्व जितनी समस्याएँ होती हैं विवाह के पश्चात वह दूगुनी हो जाती है। इस संसार में व्यक्तियों का स्वभाव या रूचि एक सी नहीं होती। उसमें थोडा बहुत अंतर तो हो ही जाता है। इसी कारण किसी भी विवाहित दम्पति में विचार भेद से टकराव आ जाता है। विवाह जीवन भर का साथ होने के कारण पति पत्नी में आपस में समझोता करना जरूरी है। पति पत्नी के बीच झगडा होना तो स्वाभाविक है लेकिन जब उनमें से कोई एक विचार को लेकर अड जाए तो सम्बंध बिगडने की सभावनाएँ अधिक है। हम स्त्री पुरूष समान शिक्षा और समान जीवन लक्ष्य की ओर आगे बढ रहे हैं दोनो अपने अपने स्वतंत्र मनोबल और मनोभाव के सहारे नये जीवन की ओर देख रहे हैं।शिक्षित नारी पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता से प्रभावित आधुनिक नारी के व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण्णत्मक चित्रण इस दशक की महत्वपूर्ण विशेषता है। जीवन विवाह और प्रेम के प्रति नारी के विभिन्न दृष्टिकोण निम्नलिखत कहानियों में मिलते हैं –संतोष श्रीवास्तव की 'तोता', दास सत्यनारायण की कहानी 'खुशफहमी,' रंगे हाथ , डॉ वीरेद्र सक्सेना की कहानी 'मुलाकातें' तत्तोत बालकृष्णन की कहानी 'दिन में भीख रात में ऋृंगार', हसन जमाल की कहानी 'ऐ से ऐना और ऐ से ..'आदि

औपचारिकता बौद्धिक युग के सामाजिक जीवन में नारी के चरित्र की द्विधात्मक अभिव्यक्ति निम्नलिखित कहानियों में देखी जा सकती है। मैत्रयी पुष्पा की कहानी 'बेटी," मैं सोचती हूँ कि'..., मनमोहन मदारिया की कहानी 'क्या सच क्या झूठ' , 'बने बिगडे रिकार्ड,' 'मादाम लांड्री,' कतार सिंह दुग्गल की कहानी 'मंगलो,' 'श्रीमती मोहन' , सत्ययाकुन की कहानी 'रोशनी और अंधेरा,' 'बदचलन,' 'बौना,' ममता,' अधजल गगरी,' नमिता सिंह की 'बंतो', श्यामसुंदर दुबे की कहानी 'जो लौट नहीं सके,'डॉ रामदरश मिश्र की कहानी' अकेली वह', रमाकांत की कहानी' वह लडकी,' गुरूबचन सिंह की कहानी 'बरसात,' संजीव की कहानी 'वापसी ' , राकेश शुक्ल 'नीरव' की कहानी 'अव्यवहारिक,' डॉ पूर्णिया केडिया की कहानी 'अन्नपूर्णा,' अपना घर, मेहरूनिस्सा परवेज की कहानी 'अम्मा,' प्राण प्रतिष्ठा,' पुष्पा सक्सेना की कहानी 'इटस माई लाइफ', उसका सच' , संतोष श्रीवस्तव की कहानी 'मात दर मात,' बहते ग्लेशियर,' डॉ अजरा नूर की कहानी 'सनराइज व्यू,' अरूण प्रकाश की 'बहुत अचछी लडकी', शीला मिश्र की कहानी 'विंध्या,' रमेश कुमार की 'अब तुम पराई हो गई हो,' रमा सिंह की 'तुम आखिरी लडकी नहीं हो ', 'दिल्ली के लिए टिकट ' आदि में नारी का चित्रण मिलता है। हर युग में नारी वरदान और अभिशाप

दोनों रूपों में मिलता है । यह समाज के पुरूष वर्ग पर निर्भर करता हे कि वह नारी को किस रूप में स्वीकरता है ।

संदर्भ :–

.1अंतिम दशक की कहानियों में विभिन्न परिवेश –डॉ संजय ल मादार , जवाहर पुस्कालय मथुरा प्रथम संस्करण 2012

.2समकालीन साहित्य विविध परिप्रेक्ष्य –संपादक –संजय मादार , तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली

****